

भारतीय ज्ञान-परंपरा से समकालीन शिक्षक-शिक्षा तक: एनईपी 2020 एवं आईटीईपी के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. नीलम सिंह

(अतिथि संकाय), स्कूल ऑफ एजुकेशन फैकल्टी, डॉ बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

Article Info

ABSTRACT

Article history:

Received Jul 18, 2026

Accepted Jul 30, 2026

Published Jul 31, 2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान-परंपरा

शिक्षक-शिक्षा

पंचपदी

पंचकोश

एनईपी 2020

बहुविषयकता

भारतीय ज्ञान-परंपरा में शिक्षा को केवल ज्ञान के संप्रेषण की प्रक्रिया न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास करने का कार्य माना जाता है। जिससे छात्रों में जीवन के उच्चतर मूल्यों का विकास, कला कौशल निपुण कर एक सशक्त नागरिक बनाने का प्रयास किया जाता है। इस परंपरा में शिक्षक अर्थात् आचार्य की भूमिका मात्र विषय-ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह शिक्षार्थी के बौद्धिक, नैतिक, मानसिक एवं व्यक्तित्वगत विकास का मार्गदर्शक था। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षक-शिक्षा की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 एवं समन्वित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटेप) में भारतीय ज्ञान-परंपरा के तत्वों के समावेशन का विश्लेषण करना भी शामिल है। अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा इसमें प्राचीन भारतीय ग्रंथों, शिक्षक-शिक्षा संबंधी नीतिगत दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में शिक्षक की भूमिका एवं योग्यता, गुरु-शिष्य संबंध, श्रवण-मनन-निदिध्यासन, पंचपदी प्रणाली, पंचकोशीय विकास तथा बहुविषयक ज्ञा तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).



Corresponding Author:

Email: neelu.nsingh@gmail.com

1. Introduction

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का मूल लक्ष्य आत्मानुभूति है। आत्मानुभूति से अभिप्राय व्यक्ति के अंदर छिपी ऊर्जा की अनुभूति करना है जैसे की पंचकोशीय विकास की संकल्पना इस बात की परिचायक है कि व्यक्ति जन्म से ही शक्तियों से युक्त होता है बस उसके विकास हेतु उपयुक्त परिवेश देने की आवश्यकता है। उपयुक्त परिवेश निर्माण में शिक्षक का प्रमुख दायित्व है कि छात्र में अन्तर्निहित गुणों का विकास कर ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि, जीवन की उच्चतर मूल्य का विकास कर आत्मानुभूति की ओर ले जाने का कार्य करना था। भारतीय परम्परा में ज्ञान को बहुत विस्तृत रूप में इसमें देखा गया है अथर्ववेद में बुद्धेय शरदः शतम अर्थात् यह भी सत्य है कि ज्ञान का कोई अंत नहीं है। वैदिक और लौकिक वाङ्मय के अंतर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद आदि शास्त्रों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्थित व्यवस्था अत्यंत कुशल और प्रशिक्षित अध्यापकों पर ही निर्भर करती है। चरक संहिता के विमास्थानक में आचार्य के लक्षण, गुण आदि शिक्षक शिक्षा के स्वरूप को स्पष्ट करती है जिसके अंतर्गत शिक्षा का प्रमुख गुण बहुआयामी, शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक एवं सामाजिक गुणों में सुदृढ़ हो, चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठा और सैद्धांतिक पक्षों के साथ-साथ कर्म अभ्यास में

निपुणता वाला हो। नैषधीयचरित में अदितिबोधचरण प्रचारणै: के माध्यम से यह परिलक्षित होता है कि ज्ञान का प्रसार शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में ज्ञान किसी संकीर्ण विषय-वस्तु के रूप में नहीं देखा गया था। 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' तथा 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' जैसे कथन ज्ञान की महत्ता का पता चलता है। जिसमें छात्र के निरंतर अध्ययन और आत्म-अनुशासन की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। इसी प्रकार तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षावल्ली में शिक्षा को आचार्य, अन्तेवासी, विद्या और प्रवचन के परस्पर संबंध से देखा गया है। इससे संकेत मिलता है कि शिक्षण-अधिगम को केवल एकतरफा सूचना-प्रदान न मानकर शिक्षक, शिक्षार्थी, ज्ञान और संवाद के पारस्परिक संबंध की प्रक्रिया के रूप में समझा गया था। समय के साथ शिक्षा-व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए और शिक्षक-शिक्षा ने भी संस्थागत एवं व्यावसायिक स्वरूप ग्रहण किया। आधुनिक शिक्षक-शिक्षा में विषयज्ञान, शिक्षण-विधियों, बाल-मनोविज्ञान, मूल्यांकन, प्रायोगिक प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक दक्षताओं को व्यवस्थित रूप से स्थान मिला। इसके बावजूद शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर, शिक्षा प्रशिक्षण की गुणवत्ता तथा अपर्याप्त संसाधन जैसी चुनौतियाँ बनी रहीं। इस संदर्भ में शिक्षक-शिक्षा को केवल प्रमाण-पत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया से आगे ले जाकर अधिक व्यापक, व्यावहारिक, चिंतनशील और बहुविषयक बनाने की आवश्यकता अनुभव की गई।

इसी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक-शिक्षा को पुनर्गठित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाती है। नीति शिक्षक-शिक्षा को बहुविषयक संस्थानों से जोड़ने, चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम को बढ़ावा देने तथा शिक्षक में ज्ञान, कौशल, मूल्य और व्यावसायिक अभिवृत्तियों के समन्वित विकास पर बल देती है। इसी व्यापक दृष्टि को समन्वित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटेप) के पाठ्यचर्यात्मक स्वरूप में भी देखा जा सकता है, जहाँ भारतीय ज्ञान एवं परंपरा को शिक्षक-शिक्षा के समकालीन संदर्भ से समझने का प्रयास किया गया है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

साहू एवं प्रधान (2026) ने "इंटीग्रेटिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम्स इन टीचर एजुकेशन: एग्जामिनिंग प्री-सर्विस टीचर्स अवेयरनेस, एटिट्यूड एंड रेडीनेस फॉर क्लासरूम प्रैक्टिस" में भावी शिक्षकों में भारतीय ज्ञान-प्रणाली के प्रति जागरूकता, अभिवृत्ति तथा कक्षा में उसके प्रयोग के लिए तत्परता का अध्ययन किया। अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों तथा साक्षात्कार के आधार पर यह जानने का प्रयास किया गया कि भारतीय ज्ञान-प्रणाली को शिक्षक-शिक्षा में शामिल किए जाने के बाद भावी शिक्षक उसके व्यावहारिक प्रयोग के लिए कितने तैयार हैं। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए प्रासंगिक विषय है, क्योंकि यह केवल पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान-प्रणाली की उपस्थिति पर ध्यान न देकर उसके वास्तविक कक्षा-प्रयोग और शिक्षक की तैयारी के प्रश्न को सामने लाता है।

सिंह, तिग्गा एवं कुमार (2025) ने इंडियन नॉलेज सिस्टम इन टीचर एजुकेशन प्रोग्राम: परसेप्शन ऑफ़ पर्सपेक्टिव टीचर एड्युकेटर्स में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेशन की संभावनाओं और चुनौतियों का अध्ययन किया। 113 शिक्षक प्रशिक्षार्थी तथा 11 शिक्षकों के साक्षात्कार पर आधारित अध्ययन में पाया गया कि प्रतिभागियों में आईकेएस के समावेशन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, लेकिन प्रामाणिक अध्ययन-सामग्री, विशेषज्ञों की उपलब्धता, तथा आईकेएस के व्यावहारिक प्रयोग से संबंधित चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि आईकेएस का पाठ्यचर्या में समावेश तभी प्रभावी हो सकता है जब उसके लिए पर्याप्त संसाधन एवं शिक्षक-शिक्षकों की तैयारी सुनिश्चित की जाए।

शर्मा, जी., मित्तल, राधिका एवं ज्ञान (2023) ने "टीचर एजुकेशन इन इंडियाज़ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020: नॉलेज ट्रेडिशन, ग्लोबल डिस्कोर्सेज एंड नेशनल रेगुलेशन्स" में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित शिक्षक-शिक्षा सुधारों का विश्लेषण किया। अध्ययन में भारतीय ज्ञान-परंपरा, वैश्विक शैक्षिक विमर्श और राष्ट्रीय नियामक व्यवस्था को एक साथ रखकर शिक्षक-शिक्षा में प्रस्तावित परिवर्तनों को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन यह संकेत करता है कि NEP 2020 की शिक्षक-शिक्षा के प्रशिक्षण से सम्बंधित सुधार व भारतीय

ज्ञान समाहित करने सम्बंधित अनेक नीतिगत प्रस्ताव सुझाये गए हैं। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए इसलिए उपयोगी है क्योंकि इससे भारतीय ज्ञान-परंपरा और समकालीन शिक्षक-शिक्षा के संबंध को आलोचनात्मक दृष्टि से देखने का आधार मिलता है।

खुशी, अहमद एवं खान (2021) ने टीचर एजुकेशन इन इंडिया व्यूड थ्रू द लेंस ऑफ़ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी में एनईपी 2020 के संदर्भ में भारतीय शिक्षक-शिक्षा में प्रस्तावित परिवर्तनों का अध्ययन किया। अध्ययन में दिल्ली के शिक्षक-शिक्षा संस्थानों से जुड़े 30 शिक्षक-शिक्षकों के विचारों के आधार पर यह निष्कर्ष पाया कि एनईपी 2020 शिक्षक-शिक्षा में व्यापक सुधार की संभावनाएँ प्रस्तुत करती है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर संस्थागत, आर्थिक तथा व्यावहारिक स्तर पर कमियाँ दर्ज की गयी हैं। अध्ययन विशेष रूप से आईटेप तथा शिक्षक-शिक्षा के पुनर्गठन की आवश्यकता पर संकेत करता है।

शोध उद्देश्य

1. प्राचीन भारतीय शिक्षक-शिक्षा की प्रमुख अवधारणाओं एवं विशेषताओं का विश्लेषण करना।
2. एनईपी 2020 एवं आईटेप में भारतीय ज्ञान-परंपरा के समावेशन का प्राचीन भारतीय शिक्षक-शिक्षा के संदर्भ में विश्लेषण करना।

भारतीय ज्ञान-परंपरा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रशिक्षण में शामिल विभिन्न तत्वों का विश्लेषण

3. शिक्षक की भूमिका और अपेक्षित दक्षताएं

प्राचीन भारतीय शिक्षक-शिक्षा में आचार्य की योग्यता केवल विषय-ज्ञान तक सीमित नहीं थी। ए. एस. अल्लेकर (1944) ने एजुकेशन इन एन्सिएंट इंडिया में शिक्षक और छात्र के संबंध तथा प्राचीन शिक्षा के सिद्धांतों की चर्चा करते हुए शिक्षक की केंद्रीय भूमिका को दर्शाया गया है। विषय ज्ञान के साथ शिक्षण-कौशल, व्यवहार-कुशलता, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा तथा शिष्य की प्रकृति को समझने की क्षमता शिक्षक की अपेक्षित योग्यताओं का हिस्सा थी।

प्राचीन भारतीय शिक्षा में शिक्षक-छात्र संबंध ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार था। अल्लेकर (1944) ने प्राचीन शिक्षा में शिक्षक और छात्र के संबंध को शिक्षा के प्रमुख पक्ष के रूप में प्रस्तुत किया है। इस संबंध में केवल अनुशासन और मार्गदर्शन ही शामिल नहीं था, बल्कि प्रश्न, जिज्ञासा और विचार-विमर्श का भी महत्व था। इसीप्रकार निरुक्त मीमांसा में आचार्य के तीन कर्तव्य का उल्लेख किया गया है। जिसमें शिष्य में श्रेष्ठ आचरण विकसित करना, शास्त्र में पारंगत बनाना बुद्धि को विशद बनाने का उल्लेख किया गया है।

ज्ञानं मनुजस्य तृतीयम नेत्रं अर्थात् ज्ञान मनुष्य का तृतीय नेत्र है। ज्ञान के आदान-प्रदान में गुरु की मुख्य भूमिका होती है। गुरु में ऐसे गुण विद्यमान हो जिसका छात्र अनुकरण कर सके, प्रवाहमयी वाणी से संपन्न, वाक्पटु, प्रखर वक्ता, तार्किक व रोचक कथाओं का ज्ञाता हो तथा कठिन प्रश्नों का बोध करने में सक्षम हो (महाभारत उद्योगपर्व 33)।

इसी व्यापक गुरु परम्परा का निर्वहन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की भूमिका के रूप में दिखाई देती है। चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में भावी शिक्षकों के अवधारणात्मक ज्ञान, व्यावसायिक दक्षता और विद्यालयी अनुभव के विकास पर बल दिया गया है। इंटर्नशिप के माध्यम से उन्हें वास्तविक कक्षा-परिस्थितियों से जोड़ने का प्रयास किया गया है, ताकि वे अपने ज्ञान को व्यवहार में प्रभावी ढंग से लागू कर सकें। साथ ही, शिक्षण को केवल तथ्यों के संप्रेषण तक सीमित न रखते हुए आलोचनात्मक चिंतन, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित और विश्लेषण-आधारित अधिगम को महत्व दिया गया है। पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया को अवधारणाओं की समझ, विचारों के अनुप्रयोग और समस्या-समाधान से सक्रिय एवं स्वतंत्र चिंतन के लिए तैयार करने की अपेक्षा की गई है। इसके अतिरिक्त मूल्य, नैतिकता और उत्तरदायित्व जैसे गुणों के विकास पर भी बल दिया गया है।

4. ज्ञानार्जन की प्रक्रिया: श्रवण-मनन-निदिध्यासन एवं पंचपदी

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञानार्जन को केवल सुनने या सूचनाएँ ग्रहण करने तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि इसे श्रवण, मनन और निदिध्यासन की क्रमिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। श्रवण के माध्यम से इंद्रियों और अनुभवों से ज्ञान ग्रहण करना, मनन के माध्यम से उस ज्ञान पर तार्किक चिंतन एवं विमर्श करना तथा निदिध्यासन के माध्यम से उसे आत्मसात कर व्यवहार में लागू करना इस प्रक्रिया के

प्रमुख चरण रहे हैं। इसी प्रकार पञ्चपदी प्रक्रिया में अधिगम, बोध, अभ्यास, प्रयोग और प्रसार द्वारा ज्ञान को समझने से लेकर उसके व्यावहारिक प्रयोग और आगे प्रसार तक की क्रमबद्ध प्रक्रिया को स्पष्ट करती है।

समकालीन शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी प्रकार के सक्रिय और चिंतनशील अधिगम पर बल देती है। इसमें रटने के बजाय आलोचनात्मक चिंतन, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित एवं विश्लेषण-आधारित अधिगम को महत्व दिया गया है तथा पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया को अवधारणात्मक समझ, विचारों के प्रयोग, अनुप्रयोग और समस्या-समाधान से जोड़ने की अपेक्षा की गई है। इसी दृष्टि को शिक्षक-शिक्षा में भी स्थान दिया गया है। आईटेप के पाठ्यक्रम में भावी शिक्षकों को केवल ज्ञान का संप्रेषक बनाने के बजाय ऐसा शिक्षक बनाने पर बल है, जो स्वयं ज्ञान को समझे, उस पर चिंतन एवं विश्लेषण करे और फिर उसे कक्षा की वास्तविक परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से लागू कर सके। इस दृष्टि से श्रवण-मनन-निदिध्यासन तथा पञ्चपदी प्रक्रिया की मूल भावना आधुनिक शिक्षक-शिक्षा में समझ, चिंतन, अभ्यास, अनुप्रयोग और ज्ञान-प्रसार के रूप में दिखाई देती है।

5. पंचकोश की अवधारणा और एवं समग्र व्यक्तित्व विकास

तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षावल्ली में शिक्षा को एक चतुष्कोणीय प्रक्रिया के रूप में देखा गया है, जिसमें आचार्य, अन्तेवासी, विद्या तथा प्रवचन इसके आधारभूत तत्त्व हैं। 'आचार्याः पूर्वरूपं। अन्तेवास्युत्तररूपं। विद्या सन्धिः। प्रवचनं सन्धानं।' आचार्य और अन्तेवासी शिक्षा-प्रक्रिया के प्रमुख घटक हैं, विद्या दोनों को जोड़ने वाली कड़ी है तथा प्रवचन ज्ञान के संप्रेषण का माध्यम है। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना न होकर शिक्षार्थी के समग्र एवं सर्वांगीण विकास से जुड़ा हुआ था।

इसी समग्र विकास की अवधारणा तैत्तिरीयोपनिषद् में पंचकोशीय विकास के रूप में अभिव्यक्त होती है, जिसमें अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश का उल्लेख मिलता है। पंचकोश की यह अवधारणा व्यक्ति के विकास में शरीर, प्राण, मन, विवेक तथा आंतरिक चेतना के विभिन्न स्तरों के समन्वित विकास की ओर संकेत करती है। इस प्रकार प्राचीन भारतीय ज्ञान-परंपरा में शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य शिक्षार्थी के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास था।

इसी समग्र दृष्टिकोण की समकालीन अभिव्यक्ति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक एवं अंतर्विषयक शिक्षा के रूप में दिखाई देती है। शिक्षार्थी को किसी एक विषय की सीमाओं में आबद्ध रखने के स्थान पर विभिन्न ज्ञान-विषयों के बीच समन्वय और अंतर्संबंध स्थापित करने पर बल दिया गया है। इससे संवाद, चर्चा, तर्क, जीवन-कौशल, नवाचार, लचीलापन, अनुभवात्मक अधिगम, गहन अवलोकन तथा अंतः एवं बहुविषयक दृष्टि जैसे गुणों के विकास को बढ़ावा मिलता है। इसी समन्वित दृष्टिकोण को आईटेप (समन्वित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम) में भी देखा जा सकता है। इसमें विषयगत अध्ययन और शिक्षा-अध्ययन को एकीकृत करते हुए सैद्धांतिक ज्ञान के साथ विद्यालयी अनुभव एवं इंटरनशिप के माध्यम से उसके व्यावहारिक पक्ष को जोड़ा गया है। इस प्रकार ज्ञान के अर्जन, चिंतन और व्यवहार में प्रयोग के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि पंचकोशीय अवधारणा और समकालीन बहुविषयक शिक्षक-शिक्षा के बीच समग्र विकास की दृष्टि से वैचारिक साम्य दिखाई देता है। प्राचीन भारतीय परंपरा में यह समग्रता व्यक्ति के विभिन्न स्तरों के संतुलित विकास के रूप में अभिव्यक्त हुई, जबकि एनईपी 2020 और आईटेप में इसे बहुविषयकता, अनुभवात्मक अधिगम तथा सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के समन्वय के माध्यम से आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है। -

6. जिज्ञासा, स्वाध्याय एवं सतत अधिगम

जिज्ञासा शिक्षा-प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आधार है। 'शिक्षा-वार्तिक' के संदर्भ में शिक्षा शब्द का प्रयोग 'जानने की इच्छा अथवा जिज्ञासा' के भाव को भी व्यक्त करता है। इस दृष्टि से शिक्षार्थी में निरंतर जिज्ञासा बने रहना तथा नवीन विषयों को जानने और समझने की प्रवृत्ति विकसित करना शिक्षा की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा है। जिज्ञासा व्यक्ति को प्रश्न करने, खोजने और अपने ज्ञान का निरंतर विस्तार करने के लिए प्रेरित करती है। इसी संदर्भ में भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में कहा गया है "ग्रहणे धारणे ज्ञाने प्रयोगे चास्य सत्तम।" इसमें किसी विषय को ग्रहण करना, उसे धारण करना, उसके स्वरूप को भली-भाँति जानना तथा उसका प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना सीखने की

क्रमिक प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। अर्थात बोध, धारण और व्यवहार में प्रयोग से सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है और इसी कारण स्वाध्याय एवं अभ्यास शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण अंग बन जाते हैं। 'अभ्यासशालिनी सा विद्या' की उक्ति भी विद्या के साथ अभ्यास के अंतर्संबंध को रेखांकित करती है।

इसी दृष्टि की समकालीन अभिव्यक्ति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास (सीडीपी) के रूप में दिखाई देती है। नीति में शिक्षकों को अपने ज्ञान, कौशल और व्यावसायिक दक्षताओं में निरंतर सुधार के लिए प्रत्येक वर्ष लगभग 50 घंटे के सीडीपी कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर प्रदान करने की बात कही गई है। इसके लिए स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यशालाओं के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षक-विकास मॉड्यूल विकसित करने का प्रावधान किया गया है। इन कार्यक्रमों में आधुनिक विचारों और नवाचारों को साझा करने के साथ-साथ अनुभवात्मक शिक्षण, कला-एकीकृत शिक्षण, खेल-एकीकृत शिक्षण और कहानी-आधारित दृष्टिकोण जैसे शिक्षण-पद्धतिगत आयामों को क्रमबद्ध रूप से सम्मिलित करने की बात कही गई है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक-शिक्षा को केवल प्रारंभिक प्रशिक्षण तक सीमित न रखकर शिक्षक को निरंतर सीखने और अपनी व्यावसायिक दक्षताओं को विकसित करने वाले शिक्षार्थी के रूप में देखा गया है। शिक्षक के लिए स्वाध्याय, अभ्यास, नवीन शिक्षण-पद्धतियों का अध्ययन तथा अपने अनुभवों से सीखना उसके सतत व्यावसायिक विकास का आधार बनता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान-परंपरा में शिक्षक-शिक्षा का आधार केवल विषयगत ज्ञान न होकर शिक्षक के ज्ञान, आचरण, उत्तरदायित्व और शिक्षार्थी के समग्र विकास से जुड़ा था। श्रवण-मनन-निदिध्यासन, पंचपदी, पंचकोशीय दृष्टि, स्वाध्याय तथा संवाद जैसी अवधारणाएँ ज्ञानार्जन और व्यक्तित्व-विकास को परस्पर संबद्ध करती हैं। इन अवधारणाओं का महत्व केवल उनके प्राचीन स्वरूप में नहीं, बल्कि इस बात में है कि वे शिक्षा के उद्देश्य और शिक्षण की प्रक्रिया को व्यापक दृष्टि प्रदान करती हैं। एनईपी 2020 और आईटेप के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान-परंपरा को पुनर्जीवित कर कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया गया है। पंचपदी और पंचकोशीय विकास का आईटेप में स्पष्ट समावेश इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, जबकि स्वाध्याय, संवाद, मूल्यबोध, अनुभव और बहुविषयकता जैसे पक्ष व्यापक शिक्षक-शिक्षा दृष्टि से जुड़े दिखाई देते हैं। साथ ही चार वर्षीय समेकित कार्यक्रम, बहुविषयक संस्थान और विद्यालयी अनुभव के माध्यम से शिक्षक-तैयारी की संरचना में भी परिवर्तन प्रस्तावित किया गया है।

अतः आईटेप को प्राचीन भारतीय शिक्षक-शिक्षा की पुनरावृत्ति के रूप में देखना उचित नहीं होगा। यह भारतीय ज्ञान-परंपरा के चयनित शैक्षिक तत्वों और आधुनिक शिक्षक-शिक्षा के बीच स्थापित किए जा रहे संबंध का समकालीन रूप है। इसकी वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इन तत्वों का समावेश केवल पाठ्यचर्या तक सीमित रहता है या वे भावी शिक्षक की शिक्षण-दृष्टि, आचरण और कक्षा-व्यवहार का हिस्सा बन पाते हैं।

सुझाव

- भारतीय ज्ञान-परंपरा को केवल पृथक पाठ्यक्रम या विषय तक सीमित न रखकर शिक्षक-शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों, शिक्षण-विधियों और प्रशिक्षण-अनुभवों से जोड़ा जाना चाहिए। प्राचीन ज्ञान के प्रसार के लिए अच्छी गुणवत्तापरक पुस्तकें तैयार की जाये जिससे प्रत्येक शिक्षक व छात्र ज्ञान प्राप्त कर सीख सके।
- भावी शिक्षकों को भारतीय ज्ञान-परंपरा के मूल एवं प्रामाणिक स्रोतों से परिचित कराया जाए। मूल ग्रंथों, प्रामाणिक अनुवादों और समकालीन शोध के संतुलित उपयोग के माध्यम से परंपरागत अवधारणाओं की तथ्यपरक एवं आलोचनात्मक समझ विकसित की जानी चाहिए।

- पंचपदी तथा पंचकोशीय दृष्टि को केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित न रखकर शिक्षक-प्रशिक्षण और कक्षा-अनुभव, अभ्यास-शिक्षण से जोड़ा जाए। भावी शिक्षकों को इनके शैक्षिक उपयोग की संभावनाओं को समझने और प्रयोग करने के अवसर दिए जाने चाहिए।
- आईटेप के विद्यालयी अनुभव, और प्रशिक्षण के दौरान भावी शिक्षकों को भारतीय ज्ञान-परंपरा से संबंधित शिक्षण-विधियों को वास्तविक कक्षा-परिस्थितियों में प्रयोग करने के अवसर दिए जाने चाहिए। इससे पाठ्यचर्या और व्यवहार के बीच की दूरी कम की जा सकती है।
- भारतीय ज्ञान-परंपरा के अध्ययन को इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, भाषा, कला और विज्ञान जैसे विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों से जोड़ा जाना चाहिए। साथ ही परंपरागत अवधारणाओं का अध्ययन तर्कसंगत, आलोचनात्मक और संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप किया जाए।

Reference

- [1]. अल्लेकर, ए. एस. (1944)। प्राचीन भारत में शिक्षा। बनारस: नंद किशोर एंड ब्रदर्स।
- [2]. कौशी, पी., अहमद, जे., & खान, ए. (2021)। टीचर एजुकेशन इन इंडिया व्यूड थ्रू द लेंस ऑफ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी-2020। वाइसेज़ ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स, 10(2), 54-63।
- [3]. भारत सरकार (2012)। जस्टिस वर्मा कमीशन ऑन टीचर एजुकेशन: विज्ञान ऑफ टीचर एजुकेशन इन इंडिया-क्वालिटी एंड रेगुलेटरी पर्सपेक्टिव। उच्चाधिकार प्राप्त शिक्षक-शिक्षा आयोग की रिपोर्ट
- [4]. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (2009)। नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन: टुवर्ड्स प्रिपेरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमेन टीचर। नई दिल्ली: राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्।
- [5]. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (2023)। इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आईटीईपी): करिकुलम फ्रेमवर्क। नई दिल्ली: राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्।
- [6]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (2023)। नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023। नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्।
- [7]. शर्मा, जी., मित्तल, आर., & जयान (2023)। टीचर एजुकेशन इन इंडियाज़ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020: नॉलेज ट्रेडिशन, ग्लोबल डिस्कॉर्सेज एंड नेशनल रेगुलेशन्स कंटेम्परेरी एजुकेशन डायलॉग 20 (2) DOI: [10.1177/09731849231168728](https://doi.org/10.1177/09731849231168728)
- [8]. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
- [9]. सलूजा, चांदकिरण (2024) शिक्षा: भारतीय परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली संस्कृतसंवर्धनप्रतिष्ठानम
- [10]. साहू, पी. एवं प्रधान, जे. एस. (2026)। इंटीग्रेटेड इंडियन नॉलेज सिस्टम्स इन टीचर एजुकेशन: एग्जामिनिंग प्री-सर्विस टीचर्स अवेयरनेस, एटिच्यूड एंड रेडीनेस फॉर क्लासरूम प्रैक्टिस। EDUTAMA Tural Ilmian Penelitian Tindakan Kelas RUMAH TURNAL RIZANIA MEDIA PRATAMA DOI: [10.69533/bj6wmx23](https://doi.org/10.69533/bj6wmx23)
- [11]. सिंह, एस., टिग्गा, ए. ए. एवं कुमार, आर. (2025)। इंडियन नॉलेज सिस्टम्स इन टीचर एजुकेशन प्रोग्राम: परसेप्शन ऑफ प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स। इंडियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 2(1), 88-103

Cite this Article:

डॉ नीलम सिंह, "भारतीय ज्ञान-परंपरा से समकालीन शिक्षक-शिक्षा तक: एनईपी 2020 एवं आईटीईपी के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)*, ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 7, pp. 48-53, Jul 2026.

Journal URL: <https://vijact.com>

DOI: <https://doi.org/10.65785/vijact.v2i7.72>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content of this article, including its accuracy, originality, and ethical compliance. The publisher and editors assume no liability for any errors, copyright issues, or consequences arising from its publication or use.